

5. INCORPORATING MODERN TECHNOLOGY INTO TRADITIONAL GOND ART AND CULTURAL EXPRESSION (पारंपरिक गोंड कला में आधुनिक तकनीक का समावेश एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति)

Pallavi Verma^{a*}

^a research student, Department of Visual Arts, Allahabad University, Prayagraj U.P.

^aEmail: pallaviverma119@gmail.com

Abstract:

The Gond tribe of Madhya Pradesh is considered one of the oldest and richest tribes in India, with an art tradition that has been passed down for centuries. The history of Gond art is deeply intertwined with their myths, folklore, beliefs about nature, and daily life. Originally, this art was created on the walls and mud floors of their homes using natural pigments. It depicted trees, plants, animals, deities, and glimpses of tribal life. Over time, this art evolved from being purely decorative to becoming a significant medium for expressing the cultural identity and philosophy of the Gond community. In the present day, the influence of modern technology on this traditional art form is clearly visible. Artists are now using acrylics, inks, pens, canvas, and mixed media alongside natural pigments. Digital platforms and art exhibitions have given Gond art a new identity at both national and international levels. Technological advancements have also enhanced the creative freedom of the artists. They are now experimenting with colors, shapes, and compositions—sometimes incorporating digital textures, and at other times transforming natural forms into modern designs. This has fostered innovation in the art form, making it more appealing to contemporary audiences. Based on this, the objective of this research is to understand how the advent of technology has influenced the style, subject matter, and cultural expression of Gond art. This study presents an identification and analysis of the new artistic forms that are emerging from the confluence of tradition and technology.

मध्य प्रदेश की गोंड जनजातीय भारत की सबसे प्राचीन और समृद्ध जनजातियों में से मानी जाती है, जिसकी कला परंपरा सदियों से चली आ रही है। गोंड कला का इतिहास उनके मिथकों, लोककथाओं, प्रकृति के प्रति विश्वास और दैनिक जीवन से जुड़ा हुआ है। पहले यह कला घरों की दीवारों, मिट्टी के फर्श और प्राकृतिक रंगों से बनाई जाती थी। इसमें पेड़-पौधों, जानवर एवं देवी-देवताओं व जनजातीय जीवन की झलक मिलती हैं। समय के साथ-साथ यह कला सजावटी नहीं रही, बल्कि गोंड समाज की सांस्कृतिक पहचान और जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई। आज के वर्तमान समय में इस पारम्परिक कला पर आधुनिक तकनीक का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। कलाकार अब प्राकृतिक रंगों के साथ एक्रेलिक, इंक, पेन, कैनवस और मिश्रित माध्यम का प्रयोग कर रहे हैं। साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं कला प्रदर्शनियों ने गोंड कला को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दी है। साथ ही तकनीकी माध्यमों ने कलाकारों की रचनात्मक स्वतंत्रता को भी बढ़ाया है। वे जब अब रंगों, आकृतियों और संरचनाओं के साथ प्रयोग कर रहे हैं—कभी डिजिटल टेक्सचर जोड़ रहे हैं, तो कभी प्राकृतिक आकृतियों को आधुनिक रूपाकार में ढाल रहे हैं। इससे कला में नवाचार बढ़ा है और दशकों के लिए यह अधिक आकर्षक बन गई है। इसी आधार पर प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह समझना है, कि तकनीक के आगमन ने गोंड कला की शैली, विषय-वस्तु और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित किया है। यह अध्ययन परंपरा और तकनीक के समन्वय से विकसित हो रहे नए कलात्मक स्वरूप की पहचान और विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

Keywords: Rich, myths, cultural expressions

समृद्ध, मिथकों, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

* Corresponding author.

प्रस्तावना

गोंड जनजाति भारत की सबसे पुरानी और बड़ी जनजातियों में मानी जाती है, जिनका इतिहास हजारों वर्षों पुराना माना जाता है। यह मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश और उड़ीसा के जंगलों और पहाड़ी इलाकों में बसते आए हैं। गोंड शब्द “कोंड” या “कुंड” से निकला माना जाता है, जिसका अर्थ है पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाले लोग। प्राचीन काल में गोंड लोग छोटे-छोटे कबीलाई समूहों में रहते थे और उनका अपना सामाजिक ढांचा, अपनी भाषा (गढ़ा-मांधरी), अपने पर्व, और अपनी सांस्कृतिक परंपराएं थीं।



गोंड जनजाति लोग

भारत में जनजातीय कला एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर मानी जाती है, क्योंकि यह कला केवल सौन्दर्य या सजावट के उद्देश्य से नहीं बनाई जाती, बल्कि जीवन के अनुभवों परम्पराओं, मान्यताओं और प्राकृतिक परिवेश से गहराई से संबंधित होती है। भारत की अनेक जनजातियों में से “गोंड जनजाति” अपनी विशेष पहचान रखती है। मध्य प्रदेश के कहीं और पहाड़ी दोषों में गोंड कला की मूल संरचना उनके आस-पास के वातावरण पर आधारित है। पेड़ों की आकृतियां, जानवरों का अंकन, जंगल की लय और त्योहारों की जीवंत यह सब उनके चित्रों में अलग प्रतीक बनकर उभरता दिखाई देते हैं। गोंड कला में बनाई जाने वाली **बिन्दु व रेखाएँ**, पैटर्न और आकृतियां केवल डिजाइन नहीं हैं, बल्कि उनके विश्वासों के प्रतीक हैं। गोंड कला केवल परम्परा तक सीमित नहीं रहीं। समय के साथ सामाजिक अर्थिक और सांस्कृतिक बदलावों प्रभाव इस कला पर भी दिखाई देने लगा। विशेष रूप से “तकनीक” ने कला की दुनिया को जिस तरह बदला है, उसका असर गोंड कला पर भी दिखाई पड़ता है।

आज तकनीक कलाकारों को नए माध्यमों, नई सभावनाएं और नए मंच प्रदान कर रहे हैं। कलाकारों ने आधुनिक रंगों, ब्रशों, एक, डिजिटल आकृति और प्रिंटिंग तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं, इससे न केवल कला की शैली में परिवर्तन आया है, बल्कि प्रस्तुति के तरीकों में भी विविधता बढ़ती जा रही है। कई ऐसे कलाकार जैसे **जनगढ़ सिंह श्याम, की पत्नी ननकुसिया श्याम, दुर्गा वाई, नर्मदा प्रसाद तेकाग, आनन्द सिंह श्याम, राम सिंह उवैति, भज्जू, सुभाष व्यास, क वेक्टरमन सिंह श्याम आदि** में काम गोंड कला में हुए परिवर्तन के साक्षी हैं।



कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम

इन कलाकारों के नागर सभ्यता के सम्पर्क में आने के कारण एक तरफ जहां कुछ नए विषय जुड़े वहीं नवीनतम कला माध्यमों से जुड़े एवं आधुनिक कला के सम्पर्क में आने के बाद शैली और संयोजन के स्तर पर भी बदलव दिखाई देते हैं। इन कलाकारों की कलाकृतियां अब केवल स्थानीय मेलों व प्रदर्शनियों तक सीमित नहीं, बल्कि वैश्विक दर्शकों तक पहुंच रही हैं। इससे कला की पहचान, मांग और मूल्य तीनों में अधिक वृद्धि हुई है। गोंड कला की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति आज भी उतनी ही मजबूत है, जितनी पहले थी। वास्तविकता माध्यम बदल गए हो, लेकिन विषय, भाव और अभिव्यक्ति के मूल तत्व अब भी वहीं बने हुए हैं। कलाकार आधुनिक साधनों का उपयोग करते हुए भी पारंपरिक विषयों जोड़े हुए हैं। इस तरह मध्य प्रदेश की गोंड कला आज पुराने और नए दोनों रूपों में दिखाई देती है।

गोंड कला: ऐतिहासिक परिदृश्य – भारतीय कला के इतिहास में विभिन्न जनजातीय समुदाय का योगदान सराहनीय रहा है, जैसे, महाराष्ट्र की वर्ली विहार की मधुबनी, राजस्थान की फड़ चित्रकला, आदिवासी भील कला, गोंड कला आदि। गोंडों का प्रदेश गोंडवाना के नाम से भी प्रसिद्ध है जहाँ 14 वीं तथा 17 वीं शताब्दी के बीच गोंडवाना में अनेक राजगोंड राजवंशों का दृढ़ और सफल शासन स्थापित था। इन शासकों ने बहुत से दृढ़ दुर्ग, तालाब तथा स्मारक बनवाए। मध्य भारत की आदिवासी चेतना, लोकअनुभव और प्रकृति-केन्द्रित विश्वदृष्टि की एक प्राचीन दृश्य परंपरा है, जिसने समय के साथ अपना विशिष्ट रूप, प्रतीक-विन्यास और सौंदर्य-तत्व विकसित किए हैं। यह कला केवल चित्रनिर्माण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि गोंड समुदाय की ऐतिहासिक स्मृतियों, ब्रह्मांड-चेतना और जीवंत सांस्कृतिक मान्यताओं का एक रूपांतरण है। गोंड कला मध्य

भारत की प्रमुख आदिवासी कला है, जो गोंड जनजाति के जीवन, परंपराओं और आस्थाओं को दर्शाती है।



दीवारों पर गोंड कला

यह मुख्यतः मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ के हिस्सों में प्रचलित हैं। गोंड चित्रकला दीवारों, छतों और कागज पर बनाई जाती है, और इसमें प्राकृतिक रंगों और पारंपरिक पैटर्न का प्रयोग होता है, इस कला में प्रयुक्त बिंदुविन्यास, लयात्मक रेखाएँ और जैविक रूपाकार एक ऐसी दृश्य भाषा रचते हैं, जिसमें जीवन की निरंतरता, प्रकृति से सहअस्तित्व और जनजातीय संवेदनशीलता स्वाभाविक रूप से प्रकट होती है। गोंड कला की विशेषता इसमें जीव और रंग-बिरंगे चित्र हैं। चित्रों में रेखाओं और बिंदुओं की तकनीक से गहराई और गति दिखाई देती है। गोंड शिल्पकला में मिट्टी, लकड़ी और धातु से बने उपकरण और सजावटी वस्तुएं शामिल हैं, जो उनके धार्मिक और सामाजिक जीवन का हिस्सा हैं।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति – गोंड कला की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति सदियों पुरानी लोक-परंपराओं और आध्यात्मिक मान्यताओं पर आधारित है। गोंड जनजाति प्रकृति को ही अपना आधार मानती है, इसलिए उनकी कला में वृक्ष, पर्वत, पशु-पक्षी, जल और ब्रह्मांडीय आकृतियों का विशेष महत्व दिखता है। पारंपरिक रूप से यह कला सिर्फ सजावट का माध्यम नहीं थी, बल्कि हर चित्र एक कथा, एक विश्वास और एक सामाजिक स्मृति को संजोता था। पौराणिक कथाएँ, देवी-देवताओं के लोकरूप, जयसिंह वृक्ष, सर्प, हिरण और अन्य जीव उनकी कला का हिस्सा बनकर जनजातीय पहचान को जीवित रखते हैं। गोंड जनजाति की सांस्कृतिक उनके जीवन के घर पहलू में दिखती हैं। ये मुख्यतः कला, संगीत, नृत्य, कथाकथन और लोकगीतों के माध्यमों से होती हैं। गोंड चित्रकला उनके धार्मिक विश्वासों, प्राकृतिक प्रतीकों और सामाजिक जीवन का दर्पण हैं। गोंड कथा-कथन और लोककहानियाँ इनके उनके, इतिहास, आस्थाओं और जीवन मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित करती हैं। शिल्पकला और हस्तशिल्प भी उनकी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का हिस्सा है, जो उनके जीवन और परम्पराओं को दिखाते हैं। उस प्रकार, गोंड सांस्कृति उनके विश्वास, जीवन और समाज की जीवंत पहचान का प्रतिनिधित्व करती हैं।

तकनीकी आगमन और परिवर्तन-

गोंड कला सदियों तक अपनी पारंपरिक शैली, प्राकृतिक रंगों और मौखिक परंपराओं के सहारे आगे बढ़ती रही। पर जब 20 वीं सदी के अंत और 21 वीं सदी की शुरुआत में आधुनिक तकनीक और नए माध्यम आए, तो गोंड कला में बम पड़ा बदलाव आया। पहले यह कला केवल दीवारों तक सीमित थी, लेकिन अब कैनवास, एक्रेलिक रंगों, डिजिटल प्रिंट, सोशल मीडिया, आर्ट मार्केट और आधुनिक डिजाइन तकनीकों ने गोंड कला की दिशा ही बदल रही दी है। इसे तकनीक में आए बदलाव की तीन दृष्टियाँ हैं; जैसे-

माध्यमगत परिवर्तन- गोंड कला में सबसे बड़ा बदलाव तब आया जब आधुनिक तकनीक और नए माध्यम कलाकारों के सम्पर्क में आने लगे। पहले यह कला पूरी तरह से प्राकृतिक चीजों पर आधारित थी। दीवारों ही मुख्य सतह होती थी, और रंग भी मिट्टी, पत्तों, फूलों और कोयले जैसे घरेलू स्रोतों से तैयार किए जाते थे, और ये सब स्रोत अपने आप में बहुत सुन्दर था, लेकिन इनसे बनी कला ज्यादा समय तक सुरक्षित नहीं रहती थी लेकिन इन कलाओं का लाने समय तक जब तकनीक से जुड़े नए रंग। जैसे एक्रेलिक और फैब्रिक पेंट, उपलब्ध हुए, तो कलाकारों ने इन्हें अपनाना शुरू किया। इससे रंग लाने समय तक टिकने लगे और चित्र ज्यादा साफ और आकर्षक दिखाने लगे। वर्तमान समय में कई कलाकार **कैनवास, और कागज के साथ-साथ कपड़े** का भी उपयोग करते हैं, जिससे उनकी कला सुरक्षित रही है, और आसानी से कही भी ले जाई जा सकती है। तकनीक ने सिर्फ माध्यम ही नहीं बदले, बल्कि कलाकारों को डिजिटल साधनों से भी जोड़ा। अब टैबलेट व डिजिटल पेन से भी गोंड में चित्र बनाए जा रहे हैं। सोशल मीडिया ने तो कलाकारों की दुनिया ही बदल दी है – पहले जहाँ कला केवल उनके गांव तक सीमित थी, आज वहीं कला ऑनलाइन जाकर गांव तक सीमित थी, आज देश व विदेश में लोगों तक पहुंचने लगी है। इससे कलाकारों को पहचान भी मिली और रोजगार के रास्ते भी खुलें। माध्यम में आए ये बदलाव गोंड कला को आधुनिक समय के साथ जोड़ते हैं, पर फिर भी इसकी मूल पहचान बनी रही रहती है।

शैलीगत परिवर्तन- तकनीक के आगमन से गोंड कला की शैली में काफी बदलाव आए हैं। पारंपरिक गोंड शैली में बिंदु (डाट्स), रेखाएँ और लयात्मक पैटर्न प्रमुख थे। जिनका अपना सांस्कृतिक अर्थ था। इसके पीछे उद्देश्य “प्रकृति को सम्मान” और “जीवन की रक्षा” का संदेश देना था। लेकिन समय के साथ, गोंड कला की शैली में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। आधुनिक तकनीक ने कलाकारों को अधिक समान रेखाएँ, महीन पैटर्न और डिजिटल टेक्सचर बनाने की सुविधा प्रदान की, जिससे चित्र अधिक सटीक और आकर्षक दिखने लगे। पारंपरिक गोंड कला में सीमित रंगों का प्रयोग होता था-जैसे माला, सफेद, लाल व पीला; लेकिन अब कलाकार आधुनिक कलर स्कीम, ब्राइट टोन, शेडिंग एवं कलर – ब्लेडिंग तक का प्रयोग कर रहे हैं। कई आधुनिक कलाकारों पारंपरिक रूपांकनों को आधुनिक अभिव्यक्ति, एब्स्ट्रैक्ट फार्म और समकालीन संरचना के साथ जोड़ रहे हैं। डिजिटल माध्यम ने कलाकारों को एक ही डिजाइन को कई स्टाइल में प्रस्तुत करने की क्षमता दी है, जिससे शैलीगत प्रयोग और अधिक विस्तृत हो गए हैं। इस तरह तकनीक ने पारंपरिक शैली को बदले बिना उसमें आधुनिक सौन्दर्य को जोड़ा है।

विषयगत परिवर्तन-गोंड कला का विषय हमेशा प्रकृति, देवता देवकथाओं, पशु-पक्षी, वृक्ष और लोक-मान्यताओं पर आधारित रहा है। विषय सदियों तक लगभग समान रहें, क्योंकि उनका संबंध जीवन, आस्था और संस्कृति से था। परंतु तकनीक और आधुनिकता के प्रभाव ने कलाकारों को नए विषयों की ओर आकर्षित किया। आज कलाकार पर्यावरण संरक्षण, आधुनिक जीवन, सामाजिक मुद्दों, वन विनाश, जल संकट, महिला स्त्रीवाद की भूमिका, और व्यक्तिगत अनुभवों जैसे विषयों को चित्रित कर रहे हैं।

डिजिटल माध्यम की पहुंच ने गोंड कलाकारों को वैश्विक मुद्दों और समकालीन संवेदनाओं से भी जोड़ दिया है। कलाकार शहरी जीवन, आधुनिककरण और तकनीकी बदलावों को भी अपने चित्रों में शामिल कर रहे हैं। पहले जहाँ कला केवल सांस्कृतिक प्रतीकों तक सीमित थी, अब उसमें कलाकार की व्यक्तिगत सोच, समाज के प्रति दृष्टि और आलोचनात्मक विचार भी शामिल होने लगे। इससे गोंड कला अधिक विविध और अर्थपूर्ण बनी है।

आधुनिक दृष्टिकोण-

गोंड कलाकार पहले ही देशी रंगों से हटकर बाजार में आसानी से उपलब्ध कला सामग्री की ओर रुख कर चुके हैं। लेकिन 21वीं सदी में जब तकनीक ने समाज के हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, तो इसका प्रभाव गोंड कला पर भी गहराई से दिखाई देने लगा। आज गोंड कलाकार न सिर्फ पारंपरिक रूपों को बचाए हुए हैं, बल्कि आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके अपनी कला को नए माध्यम, नई शैली और वैश्विक पहचान दे रहे हैं। इस परिवर्तन को समझना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि यह दिखाता है कि परंपरा और तकनीक मिलकर कैसे एक नया सांस्कृतिक-कलात्मक भविष्य तैयार कर सकती हैं। तकनीक ने गोंड कला की कार्य-प्रक्रिया (Process) में भी बड़ा परिवर्तन लाया है। पहले कलाकार कहानी सुनाते हुए हाथ से महीन रेखाएँ बनाते थे, अब यही रेखांकन डिजिटल पेन, टचस्क्रीन जैसे सॉफ्टवेयर में भी किया जा रहा है। इससे दो बड़े फायदे हुए

(1) कलाकार अपनी डिज़ाइन बिना खराब किए बार-बार सुधार सकते हैं।

(2) डिज़ाइन को कॉपी, सेव और एडिट करके नई संभावनाएँ निकाल सकते हैं।

इसके अलावा तकनीक ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति (Cultural Expression) को और गहरा बनाया है। ऐसा इसलिए क्योंकि अब कलाकार अपनी परंपरा को डिजिटल माध्यमों में संजो रहे हैं, जिससे वह आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रूप में पहुँच सके। कई गोंड कलाकार अपनी शैली को सिखाने के लिए ऑनलाइन क्लास, वीडियो ट्यूटोरियल और डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन का सहारा ले रहे हैं। इससे कला न सिर्फ संरक्षित हो रही है बल्कि उसका ज्ञान भी फैल रहा है। तकनीक ने उनकी आवाज़ को एक ऐसा मंच दिया है जहाँ वे अपने सांस्कृतिक अनुभव, इतिहास, देवकथाएँ, और दुनिया देखने का अपना विशिष्ट तरीका साझा कर सकते हैं।

आधुनिक तकनीक का एक और सकारात्मक पहलू यह है कि यह आर्थिक अवसर (Economic Opportunity) भी बढ़ाती है। ऑनलाइन माध्यमों से कलाकार अपनी पेंटिंग, प्रिंट, डिजिटल आर्ट बेचने लगे हैं। इससे उनकी आजीविका मजबूत हुई है और कई युवा अब इस क्षेत्र को करियर के रूप में देखने लगे हैं। यह बदलाव दिखाता है कि तकनीक न सिर्फ कला को बदल रही है बल्कि कलाकार के जीवन को भी नया आयाम दे रही है।

हालाँकि, यह भी सच है कि तकनीक के कारण कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं—जैसे पारंपरिक शैली का कम होना, कॉपी किए गए डिज़ाइनों की समस्या, और आधुनिकता के कारण मौलिकता का संकट। लेकिन फिर भी, अधिकांश कलाकार इस बात से सहमत हैं कि तकनीक ने उनके लिए अवसर ज़्यादा खोले हैं और जोखिम कम किए हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि गोंड कला में तकनीक का प्रवेश एक स्वाभाविक, रचनात्मक और आवश्यक बदलाव है। यह बदलाव परंपरा को मिटाता नहीं, बल्कि उसे आधुनिक रूप में प्रस्तुत करता है। आज गोंड कला अपने मूल स्वरूप—रेखा, बिंदु, कथा और प्रकृति—को बनाए रखते हुए डिजिटल युग में नई उड़ान भर रही है। इस तरह तकनीक ने न सिर्फ इस कला का सौंदर्य विस्तृत किया है, बल्कि उसकी सांस्कृतिक गहराई और विश्वव्यापी पहचान को भी मजबूत किया है। पारंपरिक कला की यह सीमाएँ थीं कि एक बार गलती हो जाए तो पूरा चित्र बिगड़ सकता था, मगर आज डिजिटल माध्यम की वजह से कलाकार के अंदर प्रयोगशीलता बढ़ी है। कई युवा गोंड कलाकार आज डिजिटल टूल्स की मदद से पुराने लोककथाओं को आधुनिक दृश्य भाषा में बदल रहे हैं। भारत और विदेशों में कई सरकारी इमारतों की दीवारों पर बड़े भित्ति चित्र हैं। गोंड चित्रों में साइकिल, हवाई जहाज, मोटरसाइकिल, जीप, बस और बंदूक जैसे नए रूपांकनों की उपस्थिति लोक चित्रकला की आधुनिकता और गतिशील प्रकृति का उदाहरण है। गोंड पेंटिंग अपनी मूल कैनवास शैली में व्यापक रूप से लोकप्रिय है, लेकिन परिधान, सहायक उपकरण या घरेलू सामान में नहीं। इसलिए, दुनिया अवसरों से भरी हुई है। यह पेंटिंग कपड़ों पर की जा सकती है, चाहे वह हाथ से हो या ब्लॉक प्रिंटिंग, डिजिटल प्रिंटिंग, हीट ट्रांसफर प्रिंटिंग या स्क्रीन प्रिंटिंग का उपयोग करके। पेंटिंग को पुनर्जीवित करने के लिए, सरकार इस क्षेत्र में कारीगरों को प्रशिक्षित कर सकती है। पारंपरिक गोंड पेंटिंग को उनकी सुंदरता बढ़ाने के लिए तकनीकी उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके बदल दिया गया है। यह मौजूदा बाजार में उपभोक्ताओं द्वारा उत्पाद की स्वीकृति में सहायता करेगा और कारीगरों को उनके घरों में ही रोजगार प्रदान करेगा।

निष्कर्ष-

मध्य प्रदेश की गोंड जनजातीय कला में तकनीकी आगम का प्रभाव धीरे-धीरे एक ऐसी दिशा में विकसित होने लगा है, जहाँ पारंपरिक सौंदर्यबोध आधुनिक माध्यमों के साथ मिलकर एक नई अभिव्यक्ति का निर्माण करता है। गोंड कलाकारों द्वारा पहले प्राकृतिक रंग, मिट्टी, कोयला, देसी औजार और हस्तनिर्मित सतहों का प्रयोग किया जाता था, परंतु तकनीकी परिवेश बढ़ने के साथ माध्यमगत स्तर पर उनके कार्यों में ऐक्रेलिक रंग, फाइन लाइनर पेन, डिजिटल ड्राइंग टैबलेट, प्रिंटर आधारित प्रिंट-मेकिंग तथा ऑनलाइन माध्यमों का प्रयोग दिखाई देने लगा है। माध्यमगत परिवर्तन ने न केवल कला की टिकाऊ क्षमता को बढ़ाया है, बल्कि कलाकारों को बड़े आकार, सूक्ष्म रेखांकन और विस्तृत रंग-लेपन जैसी संभावनाएँ भी प्रदान की हैं। इन्हीं बदलावों के साथ चलित तकनीक में भी उल्लेखनीय परिवर्तन आया है, जहाँ पारंपरिक हाथ-चलित उपकरणों की जगह अब डिजिटल ब्रश, फोटो-एडिटिंग सॉफ्टवेयर, स्कैनर, प्रोजेक्शन आधारित रेखांकन और डिजिटल रिपीट पैटर्न तकनीक का उपयोग बढ़ा है। **आधुनिक तकनीक के समावेश** से न केवल संरक्षित हुई है बल्कि नई दिशा और वैश्विक मान्यता भी प्राप्त की है। डिजिटल पेंटिंग, प्रिंटिंग तकनीक और मिश्रित माध्यमों के प्रयोग ने पारंपरिक आकृतियों, रंगों और कथात्मक शैली को बनाए रखते हुए कला को नए स्वरूप में प्रस्तुत किया है। आधुनिक तकनीक के माध्यम से कलाकार सामाजिक, पर्यावरणीय और सांस्कृतिक विषयों को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त कर पा रहे हैं, जिससे गोंड कला पारंपरिक मिथकों और लोककथाओं के साथ समकालीन मुद्दों को भी जोड़ती है। तकनीकी नवाचार से कलाकारों को बिंदु, आकृति और रंग संयोजन को नए तरीके से प्रस्तुत करने की स्वतंत्रता मिली है, जिससे कला का आकर्षण बढ़ा और नई पीढ़ी को इसे सीखने और अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है। यह स्पष्ट होता है कि पारंपरिक गोंड कला में आधुनिक तकनीक का समावेश केवल एक प्रयोग नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का महत्वपूर्ण माध्यम है। भविष्य में डिजिटल माध्यम, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मिश्रित तकनीक के प्रयोग से गोंड कला और अधिक समृद्ध और व्यापक रूप में प्रस्तुत की जा सकती है। इस प्रकार, पारंपरिक गोंड कला और आधुनिक तकनीक का संयोजन कला को पारंपरिक और समकालीन दृष्टिकोण दोनों से समृद्ध करता है और कलाकारों तथा दर्शकों दोनों के लिए एक सशक्त और प्रेरणादायक मंच प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. एलविन वेरियर जनजातीय मिथक उड़िया आदिवासियों की कहानियाँ प्रकाशन राजकमल प्रकाशन प्रथम 2008
2. महावर निरंजन समग्र गोंड जनजातीय संस्कृतिक अध्ययन
3. समकालीन कला पत्रिका अंक 18 नवम्बर 2000
4. समकालीन कला पत्रिका अंक 38
5. डा. तिवारी प्रतिमा मध्य प्रदेश में गोंड जनजाति के लोगों का सांस्कृतिक महत्व और कला
6. डी. मोहन लाल जाट, जनजातीय चित्रकला पर खतरे, समकालीन कला अंक 44.45, ललित कला अकादमी प्रकाशन नई, दिल्ली
7. <https://indianculture.gov.in/hi/paintings/gaonda-caitarakalaaen/gaonda-caitarakalaaen>